# हिन्दी साहित्य

# HINDI LITERATURE

DTVF/17–HL-**HL6**

| | |
|---|---|
| *निर्धारित समयः तीन घंटे* <br> ***Time allowed: Three Hours*** | *अधिकतम अंकः 250* <br> ***Maximum Marks: 250*** |

नाम (Name): Pradeep Kumar Dwivedi

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 06 17/09/2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: 0 0 2 1 3 7 9

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

## Question Paper Specific Instructions

***Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:***

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

*The number of marks carried by a question/part is indicated against it.*

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

*Word limit in questions, if specified, should be adhered to.*

*Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.*

*Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.*

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 143½ टिप्पणी (Remarks): उत्तम

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias



*Copyright – Drishti The Vision Foundation*

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

## SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) "सतगुरु लई कमाँण करि बाँहण लागा तीर।
एक जु बाह्या प्रीति सूँ भीतरि रह्या सरीर।।"

संदर्भ: प्रस्तुत पद्यखण्ड (दोहा) पं श्यामसुंदर दास द्वारा संकलित 'कबीर ग्रंथावली' के 'सतगुरु को अंग' से उद्धृत है। प्रस्तुत दोहे में कबीर सतगुरु के प्रभाव का मार्मिक विश्लेषण कर रहे हैं।

व्याख्या: कबीर कहते हैं कि सद्गुरु ने वाणी रूपी कमान से ज्ञान का ऐसा तीर मेरे ऊपर छोड़ा कि उसके लगते ही मेरे समस्त मस्तिष्क मन-मस्तिष्क में प्रीति बिंध गई अर्थात मेरा पूरा अज्ञान मिट गया और ईश्वर के प्रेम की ज्योति मेरे अंदर हो गई।

विशेष: 1. ध्यातव्य रहे कि कबीर गुरु को ईश्वर से भी उच्च स्थान देते हैं। उसी तारतम्य में गुरु की महिमा सुन्दर बन पड़ी है।

2. खड़ी बोली के लक्षण जैसे न → ण कमाँण, बाँहण जैसे शब्दों में दिखते हैं


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3. ~~तीर को ज्ञान के~~ ज्ञान के रूप में 'तीर' प्रतीक का प्रयोग किया गया है। यह रूपक सुंदर बन पड़ा है

4. कबीर की भाषा 'पंचमेल खिचड़ी' स्पष्टतः प्रदर्शित हो रही है।

6/10



Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) दूर करहु बीना कर धरिबो।
मोहे मृग नाहीं रथ हाँक्यो, नाहिंन होत चंद को ढरिबो।।
बीती जाहि पै सोई जानै कठिन है प्रेमपास को परिबो।
जब तें बिछुरे कमलनयन, सखि, रहत न नयन नीर को गरिबो।।
सीतल चंद अगिनि सम लागत कहिए धीर कौन बिधि धरिबो।
सूरदास प्रभु तुम्हारे दरस बिनु सब झूठो जतननि को करिबो।।

संदर्भ: प्रस्तुत पद्यखण्ड (पद) आचार्य शुक्ल द्वारा संकलित और सूरदास द्वारा रचित 'भ्रमरगीत सार' से उद्धृत है। पद में सूर राधा की विरह वेदना का मार्मिक वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या: सूर कथन करते हुए कहते हैं कि हे राधा विरह से ध्यान हटाने के लिए तुमने वीणा बजाने का जो निश्चय किया उस वीणा के स्वर से चंद्र के रथ के मृग आगे बढ़ने से मना कर रहे हैं क्योंकि वे वीणा के स्वर में मुग्ध हो गए हैं और इस कारण यह रात अटक गई है क्योंकि चंद्र आगे नहीं बढ़ पा रहा। सूर की राधा अपनी व्यथा बताते हुए कहती हैं कि प्रेमपाश जिसको घेरती है वही इस विरह को समझ सकता है। कमलनयन अर्थात् श्रीकृष्ण जबसे बिछुड़े हैं तब से आँसू रुकने का नाम नहीं ले रहे


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शीतल चंद्रमा भी अग्नि के समान लग रहा है तो आप ही बताएँ कि किस तरह धीरज रखूँ सूर कहते हैं कि हे प्रभु आपके दर्शनों के बिना सारे प्रयत्न व्यर्थ हैं।

विशेष: 1. राधा के विरह की मार्मिक व्यंजना सूर के काव्य में अप्रतिम है। इस दृष्टि से न तो जयदेव उनके सामने ठहरते हैं न कोई अन्य कवि।

2. 'सीतल चंद अगिनि सम' में विरोधाभास अलंकार का प्रयोग।

3. 'सूरदास' कल्पना व 'उपमा' के कवि माने जाते हैं। चंद्रमा के रथों के रुकने की कल्पना के प्रसंग को आचार्य शुक्ल प्रभृति आलोचकों ने 'बिना सिर पैर की उड़ान' बताया है।

6/10



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जाने दो वह कवि-कल्पित था,
मैंने तो भीषण जाड़ों में
नभ-चुंबी कैलाश शीर्ष पर,
महामेघ को झंझानिल से
गरज-गरज भिड़ते देखा है,
बादल को घिरते देखा है

<u>संदर्भ</u>: प्रस्तुत पद्यखण्ड आधुनिक भारत के जनकवि 'नागार्जुन' की कविता 'बादल को घिरते देखा है' से उद्धृत है। नागार्जुन वस्तुपरक यथार्थ व सौन्दर्य को स्थापित करते हुए समस्त मिथकों एवं कल्पनाओं का खण्डन कर रहे हैं।

<u>व्याख्या</u>: नागार्जुन कहते हैं कि जिन भी कवियों ने हिमालय में कुबेर की अलकापुरी, या शिव के निर्मल वास की कल्पना की है वो कोरी कल्पना की उड़ान के सिवा कुछ नहीं। उन्होंने तो जाड़ों के समय कैलाश की चोटी पर महामेघ को झंझानिल से भिड़कर बर्फ बरसाते देखा है। उन्होंने 'बादल को घिरते देखा है' टेक का प्रयोग करते हुए बताया कि हिमालय के सौन्दर्य को अभिजात्यवादी मानकर रखना नहीं बल्कि सर्वजनसुलभ बनाना है। उन्हों

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उस सौन्दर्य को स्वयं देखा है।

विशेष :

1. 'बादल को घिरते देखा है' पंक्ति के माध्यम से 'अनुभवपरक यथार्थ' का चित्रण किया गया है।

2. प्रकृति के स्वरूप का चित्रण करने के लिए अनुकूल 'तत्सम-बहुला' भाषा का प्रयोग

3. ~~साथ~~ 'गाड़े' जैसे देशज शब्द का भी कथ्यानुरूप प्रयोग किया गया है।

6/10


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) मुझे स्मरण है:
और चित्र प्रत्येक
स्तब्ध, विजड़ित करता है मुझ को।
सुनता हूँ मैं
पर हर स्वर-कम्पन लेता है मुझ को मुझ से सोख-
वायु-सा नाद-भरा मैं उड़ जाता हूँ।...

प्रसंग: प्रस्तुत पद्यखण्ड प्रयोगवाद के प्रणेता कवि 'अज्ञेय' की प्रतिनिधि कविता 'असाध्यवीणा' से लिया गया है। अज्ञेय प्रियंवद के 'व्यक्तित्व विलयन' की स्थिति को चित्रित कर रहे हैं।

व्याख्या: अज्ञेय बताते हैं कि जब प्रियंवद अपने आप को परंपरा ~~केश~~ व सृजनशक्ति को पूर्णतः सौंप देता है तब वह उस परंपरा की प्रत्येक ध्वनि, प्रत्येक चित्र को महसूस कर पाता है ~~व~~ वह महसूस करता है कि सृजन की प्रक्रिया कितनी अथक साधनाओं का परिणाम है। ~~उसे~~ प्रियंवद को प्रत्येक चित्र स्तब्ध करता है, जो ध्वनियाँ वह सुनता है ~~वह~~ वे ~~उसके~~ उसे सारे अहं का विलयन कर 'आत्मनिवेदन' की स्थिति में पहुँचा देती हैं और वह अपने को वायु सा हल्का पाकर ~~उड़~~ उड़ने लगता है।



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष : 1. कविता प्रयोगवाद की प्रतिनिधि कविता होने के कारण लय को तो स्वीकार करती है परन्तु छंद के पारंपरिक ढाँचे को नहीं। आंतरिक लय उपस्थित है।

2. अज्ञेय की काव्यभाषा में तद्भव शब्दों की प्रधानता रही है, वही स्थिति यहाँ भी है।

3. व्यक्तित्व के विलयन को सर्जनात्मक रहस्यवाद के माध्यम से व्यक्त किया गया है।

6/10


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) पिस गया वह भीतरी
औ' बाहरी दो कठिन पाटों बीच,
ऐसी ट्रैजेडी है नीच!!
बावड़ी में वह स्वयं
पागल प्रतीकों में निरंतर कह रहा
वह कोठरी में किस तरह
अपना गणित करता रहा
औ' मर गया...

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यखण्ड नईकविता एवं प्रगतिवाद के पुरोधा ~~लेखक~~ कवि 'मुक्तिबोध' की प्रतिनिधि कविता 'ब्रह्मराक्षस' से उद्धृत है। कवि यहाँ मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के आत्मसंघर्ष का मार्मिक चित्रण कर रहा है।

व्याख्या : ज्यामितीय संगत विश्वचेतस् व्यक्तित्व को पाने की कामना और व्यावहारिक आत्मनिष्ठता की उपस्थिति के बीच ब्रह्मराक्षस पिस गया। अर्थात त्रासद अंत को प्राप्त हुआ। वह अपने ज्ञान का उपयोग समाज के हित में नहीं कर पाया। और अतिरेक वस्तुनिष्ठता को प्राप्त करने के चक्कर में खुद से ही संघर्ष करता रहा और मर गया।



Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

विशेष :

1. आंतरिक आत्मसंघर्ष की तुलना चक्की के पाटों से की गई। कबीर के यहाँ भी कुछ-कुछ ऐसा ही भाव मिलता है –

"चलती चाकी देखकर दिया कबीरा रोय
दो पाटन के बीच में साबित बचा न कोय"

2. फैंटेसी शिल्प का प्रयोग यथार्थ को व्यक्त करने के लिये किया गया है

3. मुक्तिबोध ~~कथ्यानुरूप शब्द-चयन को प्रधानता~~ दी है। वे 'हैंण्डी' जैसे विदेशज शब्दों का भी प्रयोग करते हैं और 'नीच' जैसे गालीनुमा शब्दों को भी

6/16



Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. (क) 'असाध्यवीणा' 'सृजन तत्त्व' की गहन व्याख्या करने वाली कविता है- इस कथन के परिप्रेक्ष्य में इस कविता पर विचार कीजिए। 20

'असाध्यवीणा' अज्ञेय के काव्य की प्रतिनिधि कविता है जिसे आलोचकों ने शिल्प एवं वस्तु दोनों दृष्टि से उनकी रचना का ~~सबा~~ उत्कर्ष बताया है।

अर्थवत्ता में वैविध्य को धारण करती इस कविता की संवेदना का एक विश्लेषण 'सृजन तत्व की गहन व्याख्या' की दृष्टि से भी किया जाता है और ~~यह~~ इसी समग्र व्याख्या को कविता की लम्बाई का कारण बताया जाता है।

असाध्यवीणा सृजन तत्व की व्याख्या चार स्तरों पर करती हैं वे हैं सृजन की अर्हता, सृजन की प्रक्रिया, सृजन तत्व का स्वरूप व सृजन का प्रभाव।

~~सृ~~ सृजन की अर्हता को विश्लेषित करते हुए अज्ञेय बताते हैं कि सृजन हेतु जो पारंपरिक अर्हताएँ जैसे कि गुण, ज्ञान, अभ्यास, प्रतिभा, व्युत्पत्ति इत्यादि मानी गई हैं वे ~~o~~ वीणा को


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

साधने में विफल रही हैं
" मेरे ~~सब~~ हार गए सब जाने माने कलावंत
सबकी प्रतिभा हो गई अकारथ, दर्प चूर"
अत: सृजन हेतु एक अन्य अर्हता भी चाहिए और वह है 'आत्मनिवेदन का भाव' व 'व्यक्तित्व विलयन' की क्षमता। प्रियंवद वीणा को साधने का प्रयास नहीं करता वह स्वयं को अहंकारशून्य स्थिति में ले जाता है और इसलिए वह सफल भी होता है।
सृजन तत्व का दूसरा ~~तत्व~~ अंग है 'सृजन की प्रक्रिया'। प्रियंवद के माध्यम से अज्ञेय बताते हैं कि सृजन की प्रक्रिया आंतरिक होती है बाह्य नहीं। सर्जक को अपने व्यक्तित्व का विलयन कर अहंकारशून्य आत्मनिवेदन की स्थिति को प्राप्त करना होता है तभी सृजन का कार्य सम्पन्न होता है। प्रियंवद इसी प्रक्रिया का पालन करता है
" ~~स्वयं~~ वीणा नहीं, स्वयं अपने को शोध रहा था"


दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तथा उसने 'सौंप दिया था स्वयं को उसी किरीटी तरु को'।

सृजन तत्व के स्वरूप का विश्लेषण करते हुए अज्ञेय बताते हैं सृजनशक्ति अपने मौन में समस्त स्वरों को समाहित किये हुए है; इसी समष्टि में सभी व्यष्टि विद्यमान है। जेन बौद्धमत से प्रभावित अज्ञेय सृजन तत्व के स्वरूप की व्याख्या 'महामौन' के रूप में करते हैं।

अन्त में सृजन के प्रभाव को बताते हुए कविता बताती है कि सृजन का प्रभाव समग्र होते हुए भी वैयक्तिक है। प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने स्वधर्मानुसार प्रभावित होता है और क्रांतिकारी परिवर्तन होता है।

"राजा ने अलग सुना
× × × × ×
रानी ने अलग सुना; सब अलग-२ एकाकी पार तिरे

तथा "उठ गयी सभा
सब अपने-अपने काम लगे


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

युग पलट गया।"

समग्रत: कविता की मूल संवेदना सृजन तत्व की समग्र व्याख्या ही है।

12/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3



कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) "'मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का आत्मसंघर्ष' ब्रह्मराक्षस कविता का केन्द्रीय स्वर है।" विवेचन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ब्रह्मराक्षस कविता फैंटेसी शिल्प को धारण करने के कारण विभिन्न संवेदनाओं को व्यक्त करने में सफल हुई है। एक तरफ जहाँ डॉ० रामविलास शर्मा प्रभृति आलोचक इसे 'अस्तित्ववाद का प्रभाव' बताते हैं तो श्रीकान्त वर्मा सम आलोचक 'मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का आत्मसंघर्ष'। वर्तमान दौर में श्रीकान्त वर्मा की व्याख्या को ही व्यापक स्वीकृति है और ब्रह्मराक्षस का केन्द्रीय स्वर 'मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी' का आत्मसंघर्ष ही माना गया है।

मुक्तिबोध • मार्क्सवादी दृष्टि से प्रभावित हो तीन तरह के बुद्धिजीवियों की चर्चा करते हैं (i) क्रीतदास, बौद्धिकता से असंग तथा ऐसे बुद्धिजीवी जो बौद्धिकता से असंग नहीं रहना चाहते तथा उनका नैतिक मन और व्यावहारिक मन आपस में संघर्ष करता रहता है।

इसी आत्मसंघर्ष को 'ब्रह्मराक्षस' प्रतीक के माध्यम से व्यक्त करते हुए



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मुक्तिबोध बताते हैं कि किस प्रकार जड़ मार्क्सवादी परंपराओं व अतिरेकवादी पूर्णता को प्राप्त करने के लिए ब्रह्मराक्षस लगातार प्रयत्न करता रहा। वह सामान्य व्यक्तियों से अधिक विश्वचेतस होने के बावजूद अपने आत्मचेतस व्यक्तित्व से पूर्ण मुक्ति का प्रयास करता रहा और विश्व की समस्त शोषणपरक व्यवस्थाओं के लिए खुद को जिम्मेवार मानता रहा

" बुरे-अच्छे बीच के संघर्ष से भी
उग्रतम
अच्छे - व उससे अधिक अच्छे बीच
का संगर
गहन किंचित सफलता
अति भव्य असफलता "

ऐसी अतिरेकवादी पूर्णता को प्राप्त करना संभव नहीं होने के कारण असफलता निश्चित थी और इसी कारण ब्रह्मराक्षस "कोठरी में ही अपना
गणित करता रहा
और मर गया"



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

यह उसी मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का आत्मसंघर्ष है जो जड़ वैचारिकता के फेर में पड़कर व्यक्तित्व का महत्व नहीं पहचान पाता और जो सामाजिक हित वह कर सकता था वह भी नहीं कर पाता।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) "'बादल को घिरते देखा है' कविता नागार्जुन के शिल्प कौशल का अप्रतिम उदाहरण है।" विवेचन कीजिए। 15

नागार्जुन यूँ तो मार्क्सवादी व भौतिकवादी चेतना के कवि माने जाते हैं जो शिल्प की गौण मानते हुए वस्तु को अधिक महत्व देते हैं परन्तु ~~क्योंकि~~ वे जड़ता से किसी विचारधारा से प्रतिबद्ध नहीं है और आवश्यकतानुरूप शिल्प धारण करते हैं। 'बादल को घिरते देखा है' ~~इस~~ उनके शैल्पिक कौशल का अन्यतम रूप है।

काव्यरूप: लय, ~~[illegible]~~ व छंद की दृष्टि से कविता गीत के करीब नजर आती है परन्तु न तो इसमें गीत की तरह भाव प्रवाह है और न ही आकारगत लघुता। अपनी भौगोलिक दृष्टि में समान ~~इस है~~ होने के बावजूद प्रत्येक भाग अलग-अलग स्थितियों को वर्णित करता है। ऐसे में इसे 'गीतों की श्रृंखला' कहा जा सकता है।

भाषा: साधारण भाषा के पक्षधर नागार्जुन ने यहाँ तत्समीकृत भाषा का प्रयोग किया है क्योंकि यहाँ हिमालय



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के सौन्दर्य वर्णन हेतु काम्य है। तब
की " अमल- धवल गिरि के शिखरों पर
बादल को घिरते देखा है "

तब भी जहाँ आवश्यकता महसूस हुई वहाँ
'पलथी' जैसे देशज शब्दों का प्रयोग भी
हुआ है।

बिम्ब : आधुनिक कवियों में नागार्जुन की
प्रसिद्धि बिम्बों को लेकर है। कविता
में विराट व कोमल दोनों तरह के
बिम्ब प्रयुक्त हुए हैं

उदाहरणार्थ

विराट बिम्ब – " मैंने तो भीषण जाड़ों में
महामेघ को झंझानिल से
गरज- गरज भिड़ते देखा है "

कोमल बिम्ब :- " मंद- मंद था अनिल बह रहा

प्रतीक : कविता यूँ तो वस्तुपरक अनुभविक
यथार्थ को चित्रित करती है परन्तु कुछ
आलोचकों ने बादलों को समाजवादी
क्रान्ति बताकर तथा अन्य मार्क्सवादी


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रतीकों का आरोपण किया है। इस व्याख्या को ज्यादा महत्व नहीं दिया जाता।

अलंकार : नागार्जुन ने सहज - अलंकारों का प्रयोग अर्थ घनत्व के लिए किया है।

समग्रत: 'बादल को घिरते देखा है' नागार्जुन के शैल्पिक कौशल का अप्रतिम उदाहरण है।

9/15



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'असाध्य वीणा' की काव्यभाषा का अनुशीलन करते हुए उसकी विशिष्टताओं को रेखांकित कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'असाध्यवीणा' 'अज्ञेय' के शैल्पिक कौशल की प्रतिनिधि कविता है और अज्ञेय की भाषा दृष्टि का परिचय देती है।

अज्ञेय कविता में सजग शिल्प के पक्षधर माने जाते हैं और उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है भाषा का महत्व उनके जीवन में अन्यतम है वे भाषा के विकास को चिंतन के विकास से जोड़ते हुए इसे ही रचनाकार और गैर-रचनाकार का मुख्य अंतर मानते हैं।
इसी संदर्भ में अज्ञेय की काव्यभाषा की विशिष्टताओं को रेखांकित किया जा सकता है जो इस प्रकार है

1) शब्दों का उचित, सजग प्रयोग एवं मितव्ययता को अज्ञेय प्राथमिक महत्व देते हैं। एक-एक शब्द गहन अर्थ को धारण करता है तथा स्वतन्त्र महत्व रखता है
"आ गए! प्रियंवद, केशकम्बली, गुफागेह!


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2) उपमानों एवं प्रतीकों का प्रयोग : अज्ञेय की काव्यभाषा में प्रतीकों का अप्रतिम महत्व है। उनकी दृष्टि में प्रतीक गहन संश्लेषणात्मक चिंतन की अभिव्यक्ति के लिए नितांत आवश्यक हैं। इसी क्रम में असाध्यवीणा की पूरी रचना 'सृजन की प्रक्रिया' को संप्रेषित करने के लिए हुई है।

3) बिम्बों का प्रयोग : अज्ञेय का काव्य बिम्बधर्मी प्रकृति के लिए जाना जाता है। उनके यहाँ ~~श्रव्य~~ "वर्षा की बूँदों की पटपट", "चौंके स्वग शावक की चिहुँक" जैसे श्रव्य बिंब भी आते हैं और 'दीठ से दुलराती माँ' जैसे दृश्य बिम्ब भी। उन्होंने स्पर्श बिम्बों का सृजन करते हुए " चित्र प्रत्येक स्तब्ध विप्लावित करता है मुझको
वायु सा नाद भरा उड़ जाता हूँ मैं"
भी लिखा है। उनके बिम्ब गहन चिंतन को


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पाठक की ऐन्द्रिक अनुभूतियों का विषय बना देते हैं।

4) ~~तत्सम~~ तद्भव ~~का~~ शब्दों के प्रयोग को अज्ञेय काव्य के लिए उचित मानते हैं और इसी कारण उनकी कविता में तद्भवता सर्वत्र व्याप्त है। तद्भव शब्द न तो अभिजात्य वर्ग को आतंकित करते हैं न ग्रामीण वर्ग को। वे सर्वजनसुलभता को धारण करते हैं। यथा
"सहसा बीणा झनझना उठी"

इस प्रकार असाध्यवीणा अज्ञेय की काव्यभाषा की समस्त विशिष्टताओं को धारण करती है।

11/20


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'ब्रह्मराक्षस' कविता में कवि ब्रह्मराक्षस का सजल-उर-शिष्य क्यों होना चाहता है? विश्लेषण कीजिए। 15

'ब्रह्मराक्षस' कविता मूलतः 'मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के आत्मसंघर्ष' को चित्रित करती है और इसी तारतम्य में आलोचकों द्वारा कविता की व्याख्या की गई है।

प्रतीकों के स्पष्टीकरण से ज्ञात होता है कि 'ब्रह्मराक्षस' और 'ब्रह्मराक्षस का शिष्य' ~~दोनों~~ रूपों में कवि ने मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के आत्मसंघर्ष को भी व्यक्त किया है और उसका समाधान सुझाने की भी कोशिश की है।

ब्रह्मराक्षस अपने व्यक्तित्व का त्याग कर पूर्णतः विश्वचेतस हो जाना चाहता था और अतिरेकवादी पूर्णता को प्राप्त करने के प्रयास में सदैव संघर्षशील रहा और अंत में

"वह कोठरी में
बैठकर अपना गणित करता रहा
और मर गया
मर गया वह काम आया"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

क्योंकि ऐसी ज्यामितीय संगत वस्तुनिष्ठता न ही संभव है और न ही काम्य।

अपनी असफलता से विहेलित ब्रह्मराक्षस प्रेत योनि में भी आत्मग्लानि युक्त है और वह

"घिस रहा है देह
हाथ के पंजे बराबर
बाँह छाती मुँह छपाछप'।

इसी आत्मसंघर्ष से मुक्ति दिलाने व ब्रह्मराक्षस को उसके व्यक्तित्व का महत्व बताने के लिए कवि 'ब्रह्मराक्षस का सजल उर शिष्य होना' चाहता है।
यहाँ सजल उर से तात्पर्य है व्यक्तित्व पूर्ण व भावनाओं से युक्त।

कवि जानता है कि व्यक्तित्वहीन व्यक्ति क्रांति में सहायक नहीं होता है और आवश्यकता पूर्ण विश्वचेतन होने की नहीं बल्कि सही संतुलन बनाने की है। आवश्यकता इस बात की है कि


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जड़ सैद्धांतिकता से बाहर निकलकर समाज के काम आया जाए।

ब्रह्मराक्षस को यही समझाने और प्रेत योनि से मुक्ति दिलाने के प्रतीक के माध्यम से मुक्तिबोध जड़ वैचारिकता के विरोध में खड़े होकर समाजवादी व्यक्तित्व को स्थापित कर रहे हैं।

Gd
6/15



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'हरिजन गाथा' कविता की अंतर्वस्तु पर प्रकाश डालते हुए उसकी प्रासंगिकता का निर्धारण कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'हरिजन गाथा' नागार्जुन के ~~द्वारा~~ द्वारा 1977 में लिखी गई कविता है। नागार्जुन की 'दलित चेतना' की ~~प्रस्तावक~~ प्रस्तावक यह कविता 'बेलछी कांड' की स्मृतियों की भयावहता तथा तत्कालीन समाज में क्रांति चेतना की आवश्यकता को संप्रेषित करती है।

कवि ने कविता के प्रथम खण्ड में बताया ~~कि~~ है कि लोकतांत्रिक ढाँचे में दलितों द्वारा अपने अधिकारों की माँग के फलस्वरूप उत्पन्न जातिगत संघर्ष इस हद तक पहुँच गए हैं कि

" एक नहीं; दो नहीं, तीन नहीं
तेरह के तेरह, अभागे अकिंचन मनुपुत्र
फेंक दिये गये आग की भयावह
लपटों में
साधन - सम्पन्न ऊँची जातियों वाले
सौ - सौ मनुपुत्रों द्वारा "



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

तो लोकतांत्रिक संरचना की विद्रूप प्रशासन व्यवस्था को भी उजागर करते हैं तथा बताते हैं कि जिस 'महज दस मील दूर पड़ता हो थाना" तब भी थानेदार ने कोई पहल नहीं की।

इसी क्रम में कविता कृष्ण के प्रतीक के माध्यम से नवीन क्रांति चेतना के उदय की प्रस्तावना करती है

" श्याम सलोना यह अछूत शिशु
हम सब का उद्धार करेगा "

तथा घोषणा करती है कि प्रत्येक बच्चा क्रांति का परचम लहराएगा तथा सामाजिक विद्रूपता का सामना करेगा

" अग्निपुत्र होंगे वे अंतिम विप्लव में
सहभागी होंगे "

वे इस क्रांति चेतना का उदय मजदूर वर्ग के माध्यम से कल्पित करते हैं

" खान खोदने वाले सौ-सौ
मजदूरों के बीच पलेगा "



Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

इस प्रकार नागार्जुन क्रांति की घोषणा से सामाजिक विषमताओं के शमन का मार्ग सुझाते हैं।

~~तत्कालीन~~ वर्तमान संदर्भ में चाहे मुजफ्फरपुर की घटना को देखें या ऊना की; दलित व उच्च जातियों का संघर्ष भारतीय समाज का कुरूप सच है तथा ~~क~~ उनसे दलित संघर्ष को कविता उतना ही व्यक्त करती है जितना 1977 में करती थी।

अतः नागार्जुन की यह कविता 'कालजयी' होकर हर ~~अ~~युग में प्रासंगिक बनी रहेगी जहाँ विषमता समाज को ग्रस्त करेगी व समानता की माँग उठेगी।

9/15



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

## SECTION 'B'

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) जीवन की स्थिति समय में है और समय प्रवाह है। प्रवाह में साधु-असाधु, प्रिय-अप्रिय सभी कुछ आता है। प्रवाह का यह क्रम ही सृष्टि और प्रकृति की नित्यता है।

संदर्भ: उपरोक्त गद्यांश चिंतनपरक निबंधों के सशक्त हस्ताक्षर 'अज्ञेय' के कालचिंतन संबंधी निबंध 'संवत्सर' से उद्धृत है। लेखक यहाँ सृष्टि की निरन्तरता व अनश्वरता की चर्चा कर रहा है।

व्याख्या: लेखक कहता है कि समय के प्रवाह में जीवन भी गतिमान है। जीवन में सिर्फ सुंदर व सुख नहीं खोजना चाहिए। सुख-दुख, सुन्दर-कुरूप सब सृष्टि का भाग है। यही निरंतरता सृष्टि और प्रकृति का नियम है।

विशेष: 1. गूढ़ चिंतनानुकूल सारगर्भित भाषा का प्रयोग। वाक्य-न्यूनता एवं शब्दों की मितव्ययता सुंदर बन पड़ी है।

2. भाषा में तत्सम - तद्भव के गुम्फन



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

से अभिव्यक्ति को सशक्त करती है

3. सूक्ति शैली का प्रयोग किया गया है।

4. अंग्रेजी की कहावत 'change is the only constant' में भी ऐसा ही भाव मिलता है।

6/10


Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) कविता ही हृदय को प्रकृत दशा में लाती है और जगत् के बीच क्रमशः उसका अधिकाधिक प्रसार करती हुई उसे मनुष्यत्व की उच्च भूमि पर ले जाती है। भावयोग की सबसे उच्च कक्षा पर पहुँचे हुए मनुष्य का जगत् के साथ पूर्ण तादात्म्य हो जाता है, उसकी अलग भावसत्ता नहीं रह जाती, उसका हृदय विश्व-हृदय हो जाता है।

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के काव्यशास्त्रीय निबंध 'कविता क्या है' से लिया गया है। यहाँ शुक्ल जी काव्यकर्म के महत्व को समझाते हुए समाज के लिए कविता का उपयोग बता रहे हैं।

व्याख्या : कविता मनुष्य को संकीर्ण भावनाओं की भूमि से निकालकर संपूर्ण जगत की भावनाओं से मेल कराती है और व्यक्ति को मानवता के उच्च-स्थान पर ले जाती है। ~~ऐसी स्थिति में जो भावयोग की स्थिति बनती है~~ वहाँ मनुष्य स्वार्थों से रहित हो सम्पूर्ण विश्व के साथ तादात्म्य स्थापित करता है तथा उसका हृदय विश्व-हृदय हो जाता है। वह सम्पूर्ण विश्व को अपनी परिधि में रखने लगता है।

विशेष : 1. शुक्ल जी ने ज्ञान-योग और कर्म-योग से तुलना करते हुए


दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कविता को भावयोग की संज्ञा दी है।

2. शुक्ल जी ने हर कर्म की तरह काव्यकर्म को भी समाज-सापेक्ष मानते हुए इसकी उपयोगिता सिद्ध की है।

3. भाषा विचारात्मक निबंधानुकूल है। तत्समता को धारण करते हुए भी सुग्राह्यता से कोई समझौता नहीं किया गया है। शब्दों की मितव्ययता एवं उचित वाक्य-विन्यास सुन्दर बन पड़े हैं।

6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कर्त्ता से बढ़कर कर्म का स्मारक दूसरा नहीं। कर्म की क्षमता प्राप्त करने के लिये बार-बार कर्त्ता ही की ओर आँख उठती है। कर्मों से कर्त्ता की स्थिति को जो मनोहरता प्राप्त हो जाती है उस पर मुग्ध होकर बहुत से प्राणी उन कर्मों की ओर प्रेरित होते हैं। कर्त्ता अपने सत्कर्म द्वारा एक विस्तृत क्षेत्र में मनुष्य की सद्वृत्तियों के आकर्षण का एक शक्ति केन्द्र हो जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रसंग: प्रस्तुत गद्यांश आचार्य शुक्ल के निबंध संकलन 'चिंतामणि' से उद्धृत है। इस संकलन के निबंध 'श्रद्धा और भक्ति' के माध्यम से शुक्ल जी कर्ता (कर्मशील व्यक्ति) का महत्व प्रतिपादित कर रहे हैं।

व्याख्या: शुक्ल जी लिखते हैं कि कर्ता ही कर्म का सबसे बड़ा प्रमाण है। कर्म करने की प्रेरणा कर्ता से ही प्राप्त होती है और प्राणी कर्मों की ओर आकर्षित होते हैं। जो व्यक्ति स्वयं सत्कर्म (अच्छे कर्म) करता है वह दूसरों को भी अपनी सद्वृत्तियों से आकर्षित करता है और समस्त प्राणियों के लिए आदर्श बन जाता है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विशेष : 1. सूक्तिपरक शैली 'कर्ता से बढ़कर कर्म का स्मारक दूसरा नहीं'

2. तत्समबहुल। किन्तु बोधगम्य भाषा

3. चिंतनप्रधान निबंध का उत्कृष्टतम उदाहरण

5½/10



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(घ) भारत समग्र विश्व का है, और सम्पूर्ण वसुन्धरा इसके प्रेम-पाश में आबद्ध है। अनादि काल से ज्ञान की, मानवता की ज्योति यह विकीर्ण कर रहा है। वसुन्धरा का हृदय—भारत—किस मूर्ख को प्यारा नहीं है?

प्रसंग: प्रस्तुत गद्यांश राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना के प्रतिनिधि नाटककार 'जयशंकर प्रसाद' के नाटक 'स्कन्दगुप्त' से उद्धृत है। पंक्तियों में 'धातुसेन' भारत के महत्व का वर्णन कर रहा है।

व्याख्या: धातुसेन कहता है कि भारत से समग्र विश्व को ज्ञान, संस्कृति मिली है और सम्पूर्ण विश्व भारत की ओर आकृष्ट है इसलिए भारत समग्र विश्व को प्रिय है। प्राचीन काल से ही भारत ज्ञान व मानवता का केन्द्र रहा है। धातुसेन भारत से घृणा करने वालों को मूर्ख की संज्ञा देते हुए कहता है भारत तो धरती का केन्द्र है, हृदय है; यह समस्त जन को प्रिय है।

विशेष: 1. विदेशी पात्रों द्वारा देश की प्रशंसा कराने की यह युक्ति चंद्रगुप्त नाटक में भी दिखती है



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जहाँ कार्नेलिया कहती है
" अरुण यह मधुमय देश हमारा
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता
एक सहारा "

2. भारतभूमि के गौरवशाली अतीत की व्याख्या कर लेखक युवा पीढ़ी में सांस्कृतिक चेतना व गौरव भरना चाहता है।

3. प्रसाद की भाषा तत्सम बहुला है, इसे कुछ आलोचकों ने प्रशंसित किया है तो प्रेमचन्द सम लेखकों ने 'हजारों मन मिट्टी के बोझ से दबी' बताया है।

4. धरती का मानवीकरण किया गया है।

6/10



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) सामन्ती बन्धनों के खत्म होने पर सौन्दर्य और प्रेम की भावनाएँ अपने सहज रूप मे पल्लवित होंगी और नारी कवियों की नायिका मात्र न रह जाएगी। वह श्रम करने वाली, समान अधिकार वाली नागरिक भी होगी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

~~संदर्भ: प्रस्तुत गद्यखण्ड ~~प्रगतिशील~~, ~~आलोचक~~ (डॉ० रामविलास शर्मा) ~~के~~ प्रेमचन्द आलोचनात्मक निबंध 'तुलसी साहित्य के सामन्त विरोधी मूल्य' से लिया गया है। यहाँ लेखक ~~द्वारा~~ आधुनिक सामाजिक व्यवस्था के प्राप्त होने की स्थिति में नारी की सामाजिक स्थिति पर विचार कर रहा है~~

~~व्याख्या: लेखक कहता है~~

संदर्भ: प्रस्तुत गद्यखण्ड प्रेमचन्द के उद्बोधनपरक निबंध 'साहित्य का उद्देश्य (प्रगतिशीलता)' से लिया गया है। यहां लेखक आधुनिक सामाजिक व्यवस्था ~~की~~ में नारी की सामाजिक स्थिति पर विचार कर रहा है।

रामविलास शर्मा

व्याख्या: लेखक कहता है कि जब सारे सामन्ती बन्धन टूट जाएँगे तो सौन्दर्य और प्रेम की भावनाएँ



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

शारीरिक सौन्दर्य पर आश्रित नहीं रहेगी वे सहज रूप से उदित होंगी। नारी को समानता का अधिकार मिलेगा तथा वह कवियों के देहमूलक सौन्दर्य चित्रण की वस्तु मात्र न होकर समानता की धारिणी नागरिक होगी।

विशेष: 1. उद्बोधनपरक शैली में नारी के सुन्दर भविष्य की आशा

2. भाषा बोधगम्य एवं व्याकरणबद्ध है।

3. रीतिवादी सौन्दर्यमूलक कवियों पर आक्षेप किया गया है।

8½/10


Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

6. (क) 'क्या आपको लगता है कि एक मार्क्सवादी आलोचक एवं निबंधकार होते हुए भी रामविलास शर्मा तुलसी-साहित्य का मूल्य-निर्धारण करते हुए सामान्य मार्क्सवादी अवधारणा का अतिक्रमण करते हैं।' पाठ्यक्रम में निर्धारित निबंध के आधार पर अपना मत प्रकट कीजिए। 20

तुलसी साहित्य को प्रद्युतवादियों ने जहाँ भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों का रक्षक बताया है वहीं दलित चेतना इसे 'ब्राह्मणों के प्रभुत्व की स्थापना' का काव्य बताती हैं। नारीवादी दृष्टि भी इसे आलोचना की दृष्टि से देखती है।

इस संदर्भ में डा. रामविलास शर्मा द्वारा तुलसी साहित्य का मूल्यांकन महत्वपूर्ण हो जाता है। ~~खा~~
सामान्य मार्क्सवादी धारणा 'भौतिकवाद' को प्रतिपादित करते हुए 'जगत की सत्ता को स्थापित करती है' तथा समाज के प्रत्येक वर्ग ~~को~~ के, चाहे वह दलित हो, नारी हो या मजदूर समान अधिकारों की अनुशंसा करती है। एक मार्क्सवादी आलोचक होने के कारण डा. शर्मा का साहित्य मूल्यांकन भी इसी दृष्टि से प्रभावित लगता है।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~एक तरफ वे तुल~~

वे तुलसी द्वारा शंकर के अद्वैतवाद के खंडन को जगत की सत्ता की स्थापना बताते हैं और ~~●~~ स्थापित करते हैं कि तुलसी स्वयं तत्कालीन सामंतीयों के विरुद्ध खड़े हैं।

वे भक्तिसाहित्य व भक्ति आंदोलन को सामंतवाद के विरोध में उपजा हुआ आंदोलन बताते हैं जो मुगल-सत्ता व ~~अंग्रेजों~~ यूरोपीयों के औद्योगिक पूँजीवाद का सहज परिणाम था।

तुलसी की नारी दृष्टि को वे
"कत बिधि सृजी नारि जग माँही
पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं"
के माध्यम से व्यक्त करते हुए स्थापित करते हैं कि तुलसी स्वयं नारी की सामाजिक स्थिति ~~●~~ से व्यथित थे तथा "ढोल गँवार शूद्र पशु नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी" को खलनायक के विचार



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बताकर तुलसी के विचारों से अलग कर देते हैं।

इसी प्रकार कवितावली के उदाहरण देते हुए डा. शर्मा तुलसी के अकाल चित्रण व जातिविरोधी मानसिकता के माध्यम से उनके सामंतविरोधी मूल्यों का संप्रेषण मानते हैं।

दलित-चेतना को उत्तर देते हुए वे तुलसी साहित्य के उन प्रसंगों को उद्धृत करते हैं जहाँ उन्होंने उन्हे 'सखा', 'भरत सम भाई' कहा है।

ध्यातव्य रहे कि तुलसी साहित्य की सामंती मानसिकता की बातों को ब्राह्मणों द्वारा प्रक्षेपित मानकर छोड़ देते हैं।

इस दृष्टि से ऐसा लगता है कि उनकी विचारधारा आलोचना पर हावी हो गई है परन्तु जब हम यह देखते हैं कि वे एक ब्राह्मण को सामंतविरोधी चेतना का वाहक बता रहे हैं तो यह भी लगता है कि वे ~~मा~~ मार्क्सवादी मूल्यों



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

के पड़ समर्थक नहीं।

समग्रत: डा. शर्मा की आलोचना दृष्टि में वैचारिक प्रतिबद्धता की जड़ता तो नहीं परन्तु है परन्तु यह कहने मे कोई बुराई नहीं कि उनकी दृष्टि का बहुलांश मार्क्सवादी दृष्टि से प्रभावित है।

Good 12/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) आप आचार्य रामचंद्र शुक्ल के निबंधों को वस्तुनिष्ठ मानते हैं या व्यक्तिनिष्ठ? अपना मत प्रकट कीजिए। 15

आचार्य शुक्ल के निबंधों के बारे में एक विवाद यह रहा है कि उन्हे आत्मनिष्ठ (व्यक्तिनिष्ठ) मानें या वस्तुनिष्ठ। आचार्य शुक्ल के मत पर ध्यान दें तो वे आत्म-निष्ठता व वस्तुनिष्ठता को भिन्न-भिन्न न मानते हुए स्थापित करते हैं कि आत्मनिष्ठता व वस्तुनिष्ठता सैद्धांतिक रूप से जितने विरोधी मत लगते हैं उतने हैं नहीं। आत्मनिष्ठतम भाव भी समान परिस्थितियों में किसी दूसरे व्यक्ति में आ सकते हैं तथा वस्तुनिष्ठतम सिद्ध वैज्ञानिक सिद्धांत भी नई व्याख्या होने पर बदल जाते हैं।

इसी दृष्टि में उनकी रचना का मूल्यांकन करना मान्य होगा। एक तरफ जहाँ वे मनोविकारपरक निबन्धों में मनोविकारों जैसे प्रेम, श्रद्धा, भक्ति, लोभ, मोह इत्यादि की वस्तुनिष्ठ व्याख्या करते हैं, वस्तुनिष्ठ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों को प्रतिपादित करते हैं तो काव्यशास्त्रीय निबंधों में ~~भी 'रस की लोकमंगलवादी व्याख्या' जैसे स्थानों पर वस्तुनिष्ठ सिद्धांतों~~ ~~के~~ भी सिद्धांतों की परिभाषाओं में वस्तुनिष्ठता की स्थापना करते हैं।

वहीं दूसरी तरफ वे मनोभावों के सामाजिक प्रभावों की चर्चा करते हुए तथा 'रस की लोकमंगलवादी 'व्याख्या करते हुए आत्मनिष्ठता का परिचय देते हैं तथा गहन विश्लेषण व चिंतन शैली में व्यक्तित्व व्यंजक तत्वों, हास्य-व्यंग्य, आवेश आदि का संलयन करते हुए भाव, वेग से परिपूर्ण करते हैं।

इस प्रकार यह मानना होगा कि आचार्य शुक्ल के निबंध 'विरुद्धों का सामंजस्य' है जो आत्मनिष्ठ (व्यक्तिनिष्ठ) या वस्तुनिष्ठ नहीं


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

व्यक्तिनिष्ठ और वस्तुनिष्ठ हैं।

8½/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

(ग) प्रेमचंद के निबंध 'साहित्य का उद्देश्य (प्रगतिशीलता)' के आधार पर उनकी साहित्य-संबंधी मान्यताओं को प्रस्तुत कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

प्रेमचन्द द्वारा 'प्रगतिशील लेखक संघ' के स्थापना समारोह के अवसर पर दिये गए भाषण को 'साहित्य का उद्देश्य (प्रगतिशीलता)' नामक निबंध के रूप में संकलित किया गया है।

निबंध में प्रेमचन्द ने साहित्यिक उद्देश्यों को प्रतिपादित करते हुए अपनी साहित्यिक मान्यताएँ प्रस्तुत की हैं जो इस प्रकार हैं

1. साहित्यकार अनिवार्यतः प्रगतिशील होता है। जो प्रगतिशील नहीं, वह साहित्यकार हो ही नहीं सकता।

2. साहित्य का उद्देश्य समाज की विद्रूपताओं को साधारण भाषा में जन-जन तक पहुँचाना है। अतिव्यंजना-वादी भाषा साहित्य में काम्य नहीं।

3. साहित्य-सृजन मूलतः प्रतिभा से होता है पर साहित्यकार को अभ्यास व अध्ययन से किसी एक


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विषय पर अधिकार स्थापित कर लेना चाहिए तथा उसे ही साहित्य का विषय बनाना चाहिए

4. साहित्यकार को विश्व की प्रत्येक वस्तु में प्रत्येक व्यक्ति में सौन्दर्य ढूढना चाहिए।

5. साहित्य का उद्देश्य धनार्जन नहीं। जो धनार्जन को उद्देश्य मानते हैं उनका साहित्य के क्षेत्र में कोई स्थान नहीं।

7½/15

थोड़ा और विस्तार अपेक्षित


दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation